

| | | |
|-----------------------------|----|----|
| कुतस्त्वा कश्मलमिदम् | 2 | 2 |
| कुलक्षये प्रणश्यन्ति | 1 | 40 |
| कृषिगौरक्ष्यवाणिज्यम् | 18 | 44 |
| कैर्लिङ्गैस्त्रीनगुणानेतान् | 14 | 21 |
| क्रोधाद्भवति संमोहः | 2 | 63 |
| क्लेशोऽधिकतरस्तेषाम् | 12 | 5 |
| क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ | 2 | 3 |
| क्षिप्रं भवति धर्मात्मा | 9 | 31 |
| क्षेत्रक्षेत्रज्ञयोरेवम् | 13 | 34 |
| क्षेत्रज्ञं चापि मां विद्धि | 13 | 2 |

ग

| | Ch. | Śl. |
|---------------------------|-----|-----|
| गतसङ्गस्य मुक्तस्य | 4 | 23 |
| गतिर्भर्ता प्रभुः साक्षी | 9 | 18 |
| गामाविश्य च भूतानि | 15 | 13 |
| गुणानेतानतीत्य त्रीन् | 14 | 20 |
| गुरुनहत्वा हि महानुभावान् | 2 | 5 |

च

| | Ch. | Śl. |
|-----------------------|-----|-----|
| चञ्चलं हि मनः कृष्ण | 6 | 34 |
| चतुर्विधा भजन्ते माम् | 7 | 16 |